मुलैठी

(Glycyrrhiza glabra Linn)

सदस्य सचिव
राज्य औषधीय पादप बोर्ड, हरियाणा

कार्यालय
मुख्य वन संरक्षक (परियोजनाएं),
वन विभाग, वन भवन, पंचकूला-134109
दूरभाष : 0172-2566623

मीठी जड़ों वाला महत्वपूर्ण औषधीय पौधा

मुलैठी

(Glycyrrhiza glabra Linn)

मुलैठी उन महत्वपूर्ण औषधियों में से है, जिसका उपयोग औषधीय कार्यों हेतु प्रत्येक भारतीय घर में सदियों से किया जाता रहा है। भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में इसका उल्लेख अथर्ववेद से लेकर चरक संहिता तथा सुश्रुत, अष्टांगसंग्रह एवं अष्टांगहृदय से लेकर कौटिल्य के अर्थशास्त्र तक में दिया गया है। चीनी चिकित्सा पद्धतियों में भी मुलैठी को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वस्तुतः यह ऐसा औषधीय पौधा है जिसका प्राचीन काल में तो बहुतायत में उपयोग होता ही था, वर्तमान तथा आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों में भी सम्पूर्ण विश्व में मुलैठी को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

मुलैठी के पौधे का विवरण

मुलैठी का पौधा एक बहुवर्षीय पौधा होता है जिसकी अधिकतम ऊंचाई छः फुट तक होती है। इसका मूल लम्बा झुर्रीदार तथा धूसरवर्ण होता है जिसका छिलका हटाने पर नीचे हल्का पीला रेशेदार पदार्थ निकलता है। इसके मूल तथा काण्ड़ से अनेकों शाखाएं तथा प्रशाखाएं निकलती हैं। इस पर गुलाबी अथवा बैंगनी रंग के फूल निकलते हैं। औषधीय उपयोग में मुख्यतया इसकी जड़ों तथा भूमिगत तने को सुखा कर उपयोग में लाया जाता है।

यूनानी हकीमों द्वारा मुलैठी की मुख्यतया तीन किस्में वर्णित की गई हैं जो क्रमशः मिश्री, अरबी तथा तुर्की के नाम से जानी जाती है। इनमें से मिश्री किस्म सर्वाधिक मधुर होती है तथा इसे सर्वोत्तम माना जाता है, जबकि अरबी किस्म मध्यम तथा तुर्की किस्म को निकृष्ट माना जाता है। वानस्पतिक दृष्टि से मुलैठी की तीन जातियां हैं जिनमें से इसकी टाइपिका जाति जिसका वानस्पतिक नाम **"ग्लिसिराइजा ग्लैब्रा प्रजाति टाइपिका"** है, **स्पेनी मुलैठी** के नाम से जानी जाती है। इसकी दूसरी जाति **"ग्लैंडुलिफेरा"** है

जो दक्षिणी रूस में जंगली रूप में मिलती है। इसे **रूसी मुलैठी** कहा जाता है तथा इसमें मधुरता के साथ कुछ तिक्तता एवं कटुता मिली रहती है। मुलैठी की तीसरी किस्म **''बायोलेसिया बायस''** है। यह मुख्यता ईराक में पाई जाती है तथा **फारसी मुलैठी** के नाम से जानी जाती है। मुलैठी की यह जाति अन्य जातियों की अपेक्षा स्थूल होती है। आयुर्वेद में मुलैठी की वर्णित किस्म ''जलज'' फारसी मुलैठी ही है जिसका भारत में काफी मात्रा में आयात होता है।

मुलैठी की रासयनिक संरचना

मुलैठी का प्रमुख रासायनिक घटक ग्लिसिराइज़िन (Glycyrrhizin) नामक तत्व होता है जो ग्लिसिराइज़िक एसिड के रूप में मिलता है। यह चीनी से 50 गुना ज्यादा मीठा होता है तथा मुलैठी की विभिन्न जातियों में 2 से 14 प्रतिशत तक होता है। यह तत्व मुलैठी के केवल भूमिगत भागों में ही पाया जाता है। मुलैठी की जड़ों में 0.47 प्रतिशत तक एक उड़नशील तेल भी पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें 5 प्रतिशत से 10 प्रतिषत तक सुक्रोज़ एवं डेक्स्ट्रोज़, 30 प्रतिशत स्टार्च, प्रोटीन, वसा, रेज़िन तथा 1 प्रतिशत एस्पेरिगिन आदि तत्व भी पाए जाते हैं।

मुलैठी के प्रमुख औषधीय उपयोग

मुलैठी एक बहुवर्षीय औषधीय पौधा है जिसकी जड़ों का उपयोग चिकित्सा कार्यों हेतु किया जाता है। इसके वानस्पतिक नाम ''ग्लाइसीरिजिया'' का यूनानी रूपान्तरण ''मीठी जड़'' है। वस्तुतः इसकी जड़े जो कि स्वाद में मीठी होती हैं, ही औषधीय उपयोग में लाई जाती है। वर्तमान में जिन प्रमुख औषधीय कार्यो हेतु इसकी जड़ें प्रयुक्त की जा रही है, वे निम्नानुसार हैं :–

- **गले से संबंधित विकारों के निवारण हेतु**

गले से संबंधित होने वाले विभिन्न विकारों जैसे गले में खराश, गले की खराबी तथा खांसी आदि के निवारण में मुलैठी का उपयोग घरेलू चिकित्सा पद्धतियों में प्राचीनतम समय से किया जाता रहा है। घरेलू चिकित्सा

पद्धतियों में इसका छोटा सा टुकड़ा मुंह में रखकर चूसने से खांसी तथा गले की खराश से राहत मिलती है। इसी को आधार मान कर वर्तमान में गले के विभिन्न विकारों तथा खांसी के उपचार हेतु ऐसी कई दवाइयां बनाई जा रही है जिनका प्रमुख घटक मुलैठी होता है। मुलैठी की जड़ों को पानी में भिगोकर रखकर उस पानी से गरारे करने से मुंह के छालों एवं गले की बीमारियों से भी राहत मिलती है।

- **कब्ज निवारण हेतु**

कब्ज़ निवारण हेतु मुलैठी का पावडर गुड़ एवं पानी के साथ दिया जाता है।

- **जोड़ों एवं मांसपेशियों के दर्द से राहत हेतु**

मुलैठी की जड़ों को रात भर पानी में डुबो कर रखने के उपरान्त इस पानी का सेवन करने से जोड़ों एवं मांसपेशियों के पुराने दर्द से राहत मिलती है।

- **पेट के अल्सर्स के निवारण हेतु**

पेट में अल्सर्स के कारण होने वाले दर्दो के निवारण में मुलैठी काफी लाभकारी होती है क्योंकि इससे पेट के विभिन्न एसिडो से होने वाली उतेजना (irritation) से राहत मिलती है। इसके लिए मुलैठी की सूखी जड़ों को रात भर पानी में भिगो कर रखा जाता है। इस पानी को चावल के दलिया के साथ लेने से अल्सर्स से राहत मिलती है। एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति में भी पेट के अल्सर्स के उपचार हेतु मुलैठी का उपयोग किया जाता है।

- **निकट दृष्टिविकार के उपचार हेतु**

निकट दृष्टि से संबंधित विकार के उपचार हेतु मुलैठी के पावडर का आधा चम्मच शहद अथवा घी तथा दूध के साथ खाली पेट सेवन करने से निकट दृष्टि से संबंधित विकारों का उपचार होता है।

- **गंजेपन के उपचार हेतु**

प्राथमिक अवस्था के गंजेपन, बालों के झड़ने तथा डैन्ड्रफ के उपचार में

मुलैठी काफी प्रभावी पाई गई है। इस कार्य हेतु मुलैठी की जड़ों को दूध के साथ पीस कर उनमें कुछ मात्रा में केशर मिलाकर एक पेस्ट तैयार किया जाता है। रात को सोते समय इस पेस्ट को गंजे स्थानों/प्रभावित स्थानों पर लगाने से कुछ ही हफ्तों में बाल पुनः आने लगते हैं।

- **घावों के उपचार हेतु**

मुलैठी के पावडर को मक्खन, घी अथवा शहद के साथ मिलाकर घावों अथवा पपड़ीदार त्वचा पर लेपन करने से घाव शीघ्र भर जाते हैं। इसी प्रकार मुलैठी के पत्तों की पुलटिस बांधने से सिर तथा शरीर की त्वचा पर होने वाली पपड़ी से राहत मिलती है। मुलैठी के पावडर को सीसम अथवा सरसों के तेल के साथ मिलाकर प्रभावित स्थान पर मलने से प्राथमिक अवस्था के "कार्न" ठीक हो जाते हैं।

उपरोक्त के साथ–साथ कई अन्य औद्योगिक एवं अन्य उपयोगों में भी मुलैठी बहुतायत में प्रयुक्त की जाती है। उदाहरणार्थ तम्बाकू, सिगरेट एवं सिगार को फ्लेवर प्रदान करने तथा तम्बाकू को नम करने हेतु; बीयर को खुशबू तथा झाग प्रदान करने हेतु; अग्निशामक उपकरणों में फायरफोम लिक्विड अथवा फोम स्टेबेलाइज़र के रूप मे; तथा कन्फैक्शनरी उद्योग में च्यूइंग गम, चाकलेट्स, जाम, मार्मलेड्स आदि के निर्माण में मुलैठी का बहुतायत में उपयोग किया जाता है। इतने अधिक औषधीय एवं व्यवसायिक महत्व का पौधा होने के बावजूद भारतवर्ष में मुलैठी की पूर्ति इसे विदेशों से आयात करके ही की जाती है तथा अभी भी हमारे यहां इसका बड़े पैमाने पर (5000 से 10000 टन) प्रतिवर्ष ईरान, ईराक, वर्मा, सिंगापुर तथा अफगानिस्तान से आयात किया जा रहा है। हालांकि भारतवर्ष के विभिन्न भागों में इसकी प्रायोगिक खेती प्रारंभ हो चुकी है परन्तु घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय मांग को देखते हुए इसे बहुत बड़े पैमाने पर अपनाए जाने की आवश्यकता है।

विभिन्न भाषाओं में मुलैठी के नाम

भाषा		नाम
• हिन्दी	:	मुलेठी, मुलैठी, मुमुलहटी, जेठीमघ, जेठीमधु
• संस्कृत	:	मधुका, यष्टीमधु, क्लीतक (बाहर से खरीदकर लाया जाने वाला)
• बंगाली	:	यष्ठिमधु
• मराठी	:	जेष्ठीमध
• गुजराती	:	जेठीमधा
• तमिल	:	अतिमधुरम
• सिंधी	:	मिठी काठी
• तेलगु	:	यष्ठीमधुकमु
• कन्नड़	:	अतिमधुर
• अरबी	:	इकुस्सूस, अस्लुस्सूस
• फारसी	:	बेखमरक
• अंग्रेजी	:	लिकोराइस (Licorice/Liquorice)
• वानस्पतिक नाम	:	ग्लिसीरहाइज़ा ग्लाब्रा लिन्न (Glycyrrhiza glabra Linn)
• वानस्पतिक कुल (Family)	:	लेगुमिनोस (Legiminosae) उपकुल पैपिलिओनेटी (Papilionatae)

मुलैठी की खेती की विधि

मुलैठी मुख्यतया शुष्क तथा गर्म क्षेत्रों का पौधा है जो विशेष रूप से पश्चिमी चीन, एशिया माइनर, रूस तथा अफगानिस्तान में पाया जाता है। इसके साथ–साथ यह उत्तरी अफ्रीका, स्पेन, इटली, यूगोस्लाविया, सीरिया, हंगरी, यूनान तथा दक्षिणी रूस में भी पाया जाता है। इसकी खेती मुख्य रूप से इटली, फ्रांस, रूस, जर्मनी, स्पेन तथा चीन में होती है। भारतवर्ष में इसकी खेती से संबंधित कई स्थानों जैसे बारामूला, श्रीनगर, जम्मू, देहरादून, देहली, आणन्द, इन्दौर, बंगलौर, हिसार आदि में प्रयोग किए गए हैं जो काफी सफल रहे हैं। हालांकि अभी इसकी खेती हमारे देश में कहीं भी बड़े स्तर पर प्रारंभ नहीं हो पाई है परन्तु इस संदर्भ में जो भी प्रयोग हुए हैं उनके आधार पर इसकी कृषि तकनीक को निम्नानुसार देखा जा सकता है।

मुलैठी की फसल की अवधि

मुलैठी की खेती इसकी जड़ों के लिए की जाती है। यूं तो यह एक बहुवर्षीय फसल है परन्तु **ढाई से तीन वर्ष** की अवधि में इसकी जड़ों में वांछित तत्वों का उपयुक्त विकास हो जाता है। इस प्रकार मुलैठी की खेती तीन वर्ष की अवधि की फसल के रूप में की जाती है।

उपयुक्त जलवायु

मुलैठी की खेती के लिए गर्म एवं शुष्क जलवायु ज्यादा उपयुक्त पाई जाती है। ऐसे क्षेत्र जहां वार्षिक सुवितरित वर्षा 50 से 100 से.मी. के बीच होती हो अथवा सिंचाई की उपयुक्त व्यवस्था हो, वहां इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।

उपयुक्त भूमि अथवा मिट्टी

अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट मिट्टी जिसमें जीवांश की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध हो, मुलैठी की खेती के लिए ज्यादा उपयुक्त पाई जाती है। परीक्षणों में यह पाया गया है कि 6 से 8.2 पी.एच. वाली मिट्टियों में इसकी जड़ों का अच्छा विकास होता है। ज्यादा लवणीय अथवा क्षारीय, अम्लीय, दलदली, छायादार तथा अत्याधिक रेत वाली मिट्टियां इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती।

मुलैठी की उन्नतशील प्रजातियां

मुलैठी की रूसी प्रजाति के आधार पर इसकी एक उन्नतशील प्रजाति चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार द्वारा विकसित की गई है जिसे **हरियाणा मुलैठी क्र. 1** (एच.एम.–1) का नाम दिया गया है। मुलैठी की इस प्रजाति में लम्बे, चौड़े तथा गहरे हरे रंग के पत्ते पाए जाते हैं तथा इससे अपेक्षाकृत काफी लम्बी जड़ें पैदा होती है। तीन वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने पर इस प्रजाति में प्रति एकड़ 28 से 32 क्विंटल तक जड़ों की उपज प्राप्त हो जाती है जिसमें ग्लाइसिराइज़िक एसिड की मात्रा 7.5 प्रतिशत तक पाई जाती है। उल्लेखनीय है कि अमेरिकी कम्पनी मेक एंड्रयू एंड फोबर्स कं. द्वारा एच.एम.–1 किस्म को विश्व में सर्वश्रेष्ठ करार दिया गया है।

मुलैठी के प्रवर्धन की विधि

मुलैठी का प्रवर्धन बीजों से भी किया जा सकता है तथा इसकी जड़ों से भी। क्योंकि बीजों में उगाव काफी कम रहता है अतः व्यवसायिकता की दृष्टि से इसे जड़ों से लगाया जाना ही ज्यादा उपयुक्त होता है।

बिजाई हेतु जड़ों की प्राप्ति

बिजाई हेतु जड़ें प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम पूर्व में लगाई गई फसल को खोदकर उसकी ताजा जड़ें प्राप्त की जाती हैं। इन जड़ों से 4 से 6 इंच लम्बी कलमें काट ली जाती हैं। कलमें इस प्रकार तैयार की जानी चाहिएं कि प्रत्येक कलम में कम से कम दो आंखें रहे। यह ध्यान रखना चाहिए कि ये जड़ें ताजा हों तथा सूखी हुई न हों। एक एकड़ में बिजाई के लिए लगभग 1 क्विंटल बीज (गीली जड़ों) की आवश्यकता होती है।

जड़ों को नर्सरी में तैयार करना

जड़ों से मुलैठी का प्रवर्धन करने की स्थिति में इन्हें नर्सरी आदि बनाने की बजाए सीधे खेत में लगा दिया जाता है। परन्तु काटने के उपरान्त तथा खेत में लगाने से पूर्व इन्हें 8–10 दिन तक गीली स्फेग्नम मॉस में रखा जाना उपयुक्त रहता है। मॉस में 8–10 दिन तक रखने के उपरांत जब इन कलमों में अंकुरण आना प्रारंभ हो जाए तो इन्हें मुख्य खेत में स्थानांतरित कर दिया जाता है।

मुख्य खेत की तैयारी

क्योंकि मुलैठी की खेती ढाई से तीन वर्षीय फसल के रूप में की जाती है अतः बिजाई से पूर्व खेत की अच्छी प्रकार तैयारी की जाना आवश्यक होता है। इसके लिए सर्वप्रथम अच्छी प्रकार गहरी जुताई करके खेत को भुरभुरा तथा समतल बनाया जाता है। तदुपरान्त प्रति एकड़ 5 टन गोबर तथा कम्पोस्ट खाद अथवा 2 टन केंचुआ खाद के साथ–साथ 100 कि.ग्रा. **प्रॉम जैविक खाद** खेत में अच्छी प्रकार मिला दी जाती है। जिन क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप होता हो वहां प्रति एकड़ 2 लीटर क्लोरीपाईरीफॉस/क्लासिक अथवा डरमट, 20–25 कि.ग्रा. रेत में मिलाकर खेत में डालना चाहिए। दीमक से सुरक्षा हेतु नीम की खली (200 से 300 कि.ग्रा. प्रति एकड़) का उपयोग भी किया जा सकता है।

बिजाई की विधि

स्फेगनम मॉस में 8–10 दिन तक रखने के उपरान्त जब मुलैठी की कलमों में अंकुरण होना प्रारंभ हो जाए तब इन्हें मुख्य खेत में लगा दिया जाता है। बिजाई का उपयुक्त समय जनवरी–फरवरी (सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था होने की स्थिति में) अथवा जुलाई–अगस्त का होता है। मुख्य खेत में रोपण करने से पूर्व इन कलमों को किसी फंगस रोधी दवाई से उपचारित करना उपयुक्त होता है। कलमों की बिजाई करते समय लाइन से लाइन की दूरी तीन फुट तथा पौधे से पौधे की दूरी एक से डेढ़ फुट रखी जानी चाहिए। कई बार इन कलमों को उठी हुई मेड़ों पर भी लगाया जाता है। कलमों का रोपण करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि इन 3/4 भाग ज़मीन में तिरछा दबाया जाए तथा 1/4 भाग ज़मीन के ऊपर रहे। रोपाई के तुरन्त बाद खेत में हल्का पानी दे दिया जाना चाहिए। इससे पौधों का अच्छा उगाव होता है।

सिंचाई की व्यवस्था

मुलैठी के खेत में प्रारंभिक दिनों में नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है। प्रारंभ में जब तक कलमों से जड़ें निकलना प्रारंभ न हो जाए तब तक नियमित सिंचाई दी जाने की आवश्यकता होगी। तदुपरान्त 8–10 दिन के अंतराल पर पानी दिया जाना वांछित होगा। जब फसल 5–6 माह की हो जाए तब आवश्यकतानुसार 20–21 दिन में पानी दिया जा सकता है। वैसे एक बार अच्छी प्रकार स्थापित हो जाने के उपरांत मुलैठी की फसल को ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं रहती।

निंदाई–गुड़ाई तथा खरपतवार नियंत्रण

फसल को खरपतवारों से मुक्त रखने के लिए समय–समय पर निंदाई–गुड़ाई की आवश्यकता होती है। निंदाई–गुड़ाई हाथ से ही की जानी चाहिए। विशेष रूप से जनवरी–फरवरी माह में फसल की एक बार अच्छी प्रकार हाथ से गुड़ाई करना आवश्यक होता है।

मुलैठी के साथ ली जा सकने वाली अंतर्वर्तीय फसलें

क्योंकि अपने प्रारंभिक वर्षों में मुलैठी की फसल काफी धीमें बढ़ती है, अतः जमीन तथा प्रयासों का सही उपयोग करने की दृष्टि से इसके बीच में कई अन्य फसलों जैसे गाजर, आलू, गोभी आदि लिए जा सकते हैं। इसी प्रकार आंवला आदि जैसे बड़े पौधे भी इसके बीच में लगाए जा सकते हैं।

फसल के प्रमुख कीट तथा बीमारियां

फसल के प्रारंभिक दिनों में प्रायः दीमक द्वारा छोटे पौधों को नुकसान पहुंचाया जा सकता है। विशेष रूप से जब सिंचाई की व्यवस्था न हो तब दीमक द्वारा ज्यादा नुकसान पहुंचाया जाता है। दीमक से सुरक्षा के लिए बिजाई से पूर्व खेत की तैयारी करते समय आखिरी जुताई के समय खेत में प्रति एकड़ 10–20 कि.ग्रा. एल्ड्रैक्स खेत में मिलाया जा सकता है। इसी प्रकार मुलैठी की फसल को कॉटन ग्रेवियल या एफिड्स से भी नुकसान पहुंच सकता है। इससे सुरक्षा के लिए मैलाथियान या थायडान का 0.2 प्रतिशत घोल छिड़काया जा सकता है।

एक अन्य प्रमुख बीमारी जो मुलैठी की फसल के संदर्भ में हो सकती है, वह है जड़ों का "रूट–रॉट इन्फैक्शन"। इस बीमारी का प्रकोप होने पर जड़ें अत्यधिक नर्म तथा पल्पदार हो जाती हैं। इस बीमारी के नियंत्रण हेतु भूमि में 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से "ब्रासिकोल" अथवा फरवरी माह में मिट्टी की बोर्डो मिक्सचर से ड्रेन्चिंग की जाती है। इसी प्रकार फ्यूज़ेरियम के प्रकोप से भी जड़ गलन जैसी बीमारियां हो सकती हैं जिनका प्रभावी नियंत्रण 0.05 प्रतिशत के सांध्रता के बावस्टीन अथवा बीनालेट के छिड़काव से किया जा सकता है। इसी प्रकार लीफ स्पॉट बीमारी भी पौधों को हो सकती है तथा लीफब्लॉइट भी, जिनके नियंत्रण हेतु क्रमशः 0.4 प्रतिशत के बावस्टीन का स्प्रे बिजाई के लगभग डेढ़ माह के उपरान्त तथा 0.2 प्रतिशत के ब्लाइटॉक्स का 5–5 दिन के अंतराल पर 3–4 बार स्प्रे किया जा सकता है।

फसल की कटाई

बिजाई के लगभग 3 वर्ष के उपरांत फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इस समय मुलैठी की जड़ों को खोद कर निकाल लिया जाता है। इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय पतझड़ के समय का होता है। इस कार्य हेतु डिस्क हैरो के उपरान्त कल्टीवेटर का उपयोग करके ज़मीन में 60 से.मी. तक गहरी खुदाई कर ली जाती है तथा तदुपरान्त मज़दूरों से चुनाई करवा करके जड़ें एकत्रित कर ली जाती हैं। पौधों के ऊपरी भाग (एरियल पार्ट्स) को या तो खुदाई से पहले अथवा खुदाई के उपरान्त काट करके अलग कर लिया जाता है। जड़ें साफ कर लेने के उपरान्त उनको 15–20 से.मी. लम्बे टुकड़ों में काट लिया जाता है तथा काटने के उपरान्त इन जड़ों को अच्छी प्रकार सुखा लिया जाता है। प्रायः सूखने के उपरान्त गीली जड़ों की तुलना में सूखने पर ये जड़ें 50 प्रतिशत तक रह जाती है।

उपज की प्राप्ति

अच्छी प्रकार सूख जाने पर अच्छी फसल से प्रति एकड़ 30 से 32 क्विंटल जड़ों की प्राप्ति हो सकती है। वैसे प्रति एकड़ औसतन 20 से 25 क्विंटल तक सूखी जड़ें प्राप्त हो जाती हैं।

आगामी फसल के लिए बीज व्यवस्था

जड़ों को उखाड़ने की प्रक्रिया में कुछ जड़ें भूमि में ही रह जाती हैं। जिनसे आगामी बसन्त ऋतु में पुनः पौधे निकलने प्रारंभ हो जाते हैं। इस प्रकार आगामी फसल के लिए अपने आप ही पौधे तैयार हो जाते हैं। हां! यदि कुछ स्थान खाली रह जाएं तो गेप फिलिंग के तौर पर उनमें अतिरिक्त रूट कटिंग्स लगाई जा सकती है। इस प्रकार फसल प्राप्त करने का यह सिलसिला निरन्तर चलाया जा सकता है।

फसल से कुल प्राप्तियां

मुलैठी की खेती से प्रति एकड औसतन 22 क्विंटल सूखी जड़े प्राप्त होती हैं। मुलैठी की सूखी जड़ों का बाजार भाव (गुणवत्ता के अनुसार) प्रायः 25 से 40 रु. प्रति कि.ग्रा. तक रहता है। इस प्रकार यदि सूखी मुलैठी का औसतन बाजार भाव 35 रु. प्रति कि.ग्रा. माना जाए तो इस फसल से किसान को प्रति एकड़ लगभग 77000 रु. की प्राप्तियां होती है। इनमें से यदि फसल पर होने वाले खर्च (27000 रु.) को निकाल दिया जाए तो इस फसल से 50000 रु. का शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

सूखी जड़ों की प्राप्ति के साथ–साथ इस फसल से और भी कई प्रकार की प्राप्तियां होती हैं। उदाहरणार्थ फसल खोद लिए जाने के उपरान्त भूमि में जो जड़ें बच जाती हैं वे पुनः बिजाई में प्रयुक्त हो जाती हैं। इनके साथ–साथ प्रारंभिक वर्षो में मुलैठी के बीच में दूसरी फसलों की इन्टरक्रॉपिंग भी की जा सकती है, जिससे अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार व्यवसायिक रुप से मुलैठी काफी लाभकार फसल है। विशेष रूप से इसलिए भी क्योंकि अभी हमारे देश में इसकी आपूर्ति आयात के माध्यम से हो रही है, अतः इसके विपणन में किसी प्रकार की कठिनाई आने की संभावना नहीं है। इस दृष्टि से विशेष रूप से मध्य भारत के किसानों के लिए मुलैठी उनका भविष्य बदलने वाली फसल सिद्ध हो सकती है।

मुलैठी की खेती पर होने वाले आय तथा व्यय का विवरण (प्रति एकड़)

(क) व्यय की मदें

1.	बीज पर खर्च (100 कि.ग्रा. कलमें, 100 रु. प्रति कि.ग्रा. की दर से)	=	10000/–
2.	खेत तैयार करने की लागत	=	2000/–
3.	खाद की लागत	=	1500/–
4.	बिजाई की लागत	=	500/–

5.	खरपतवार नियंत्रण पर लागत (तीन वर्षों हेतु)	=	3000/–
6.	फसल सुरक्षा पर व्यय (तीन वर्ष हेतु)	=	5000/–
7.	सिंचाई व्यवस्था पर व्यय	=	2000/–
8.	फसल की खुदाई, फसल इकट्ठा करने, काटने तथा सुखाने आदि पर व्यय	=	3000/–
	कुल योग	=	**27000/–**

(ख) व्यय की मदें

1.	22 क्विंटल सूखी जड़ों की 3500 रु. प्रति क्विंटल की दर से बिक्री से प्राप्तियां	=	77000/–

(ग) शुद्ध लाभ = 77000–27000 = 50000/–

मुलैठी